# वार्षिक परीक्षा 2017-2018

## हिन्दी

**कक्षा : XI**

**समय : 3 घंटे 15 मिनट** **पूर्णांक : 100**

---

### हिन्दी भाषा

**प्र.1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 400/450 शब्दों में निबन्ध लिखिए :-** **[20]**

(i) जब आप अपने मित्रों के साथ पिकनिक मनाने गए, वहाँ आपके साथ कुछ ऐसी घटना घटी, जिसे आप भुला नहीं सकते। उस घटना का वर्णन करते हुए बताइए कि इसका आपके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(ii) एक बार आपको एक नाटक में काम करने का मौका मिला, आपकी उस नाटक में क्या भूमिका थी ? वह भूमिका क्या थी ? आपको वह भूमिका करके कैसा लगा ? वर्णन कीजिए ।

(iii) 'एक सभ्य समाज के महान होने में वरिष्ठ नागरिकों और पूर्ववर्ती पीढ़ी का योगदान होता है।' विभिन्न उदाहरणों द्वारा इस कथन को पुष्ट कीजिए।

(iv) कर्म ही प्रबल है, भाग्य नहीं' - इस कथन के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार प्रकट कीजिए।

(v) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर मौलिक कहानी लिखिए :-

(i) ''ईमानदारी अभी भी बाकी है।

अथवा

(ii) चिट्ठी में बंद यादें।

**प्र.2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए एवं दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिए :-**

शंख और लिखित दो भाई अलग-अलग आश्रम बनाकर तपस्वी ऋषि के रूप में रहते थे। एक बार लिखित शंख के आश्रम में आए। अपने भाई को वहाँ ने देखकर वे आश्रम के बाहर बैठ गए। वे भूखे थे, आश्रम के वृक्षों में लगे सुस्वादु फलों ने उनकी क्षुधा जागृत कर दी। भाई के आने तक वे कुछ फल तोड़कर ले आए और आनंद से खाने लगे।

थोड़ी देर बाद जब शंख लौटकर आए तो उन्होंने देखा कि आश्रम में लिखित आराम से बैठे फल खा रहे थे। लिखित के फल खा चुकने के बाद शंख ने पूछा, ''भैया! ये फल तुम्हें कहाँ से मिले?'' लिखित ने सहज भाव से बताया - ''भूखा था, इसलिए मैंने ये फल आपके ही आश्रम के वृक्षों से तोड़े थे।''

शंख थोड़ा उद्विग्न हुए कि लिखित ने धार्मिक, सामाजिक मर्यादाओं को जानते हुए भी मर्यादा का उल्लंघन किया है। बड़े संकोच से कहा - ''भाई! तुमने मेरी आज्ञा के बिना फल तोड़कर चोरी की है। किसी दूसरे की वस्तु को उसकी आज्ञा के बिना किसी भी दशा में लेना चोरी के अंतर्गत आता है, अतः तुम अपने इस चोर-कर्म के दंड-निर्धारण के लिए राजा सुद्युम्न के पास जाओ और उन्हें अपना अपराध बताकर दंड स्वीकारो।'' लिखित बिना

Downloaded From www.rsseboard.org

विचलित हुए राजा के पास चले गए।

एक ऋषि को अपने दरबार में आया देखकर महाराज ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया।

आसन पर न बैठते हुए खड़े-खड़े ही लिखित ने कहा – ''महाराज, मैं एक अपराधी की हैसियत से आपके दरबार में अपने अपराध का दंड माँगने आया हूँ, अतः मैं ऋषि के नाते आपका कोई सत्कार स्वीकार करने का पात्र नहीं हूँ। मेरे साथ एक अपराधी जैसा व्यवहार करें, मुझे मेरे अपराध का दंड दें।'' यह कहकर लिखित ने स्वामी की अनुमति के बिना चोरी से फल तोड़कर खाने की बात कही।

महाराज सुद्युम्न ने कहा – ''ऋषि लिखित! यद्यपि धर्म की मर्यादा से यह चोरी का अपराध है, पर आपके इस अपराध के पीछे कोई दुर्भावना नहीं थी और न ही इसके कारण किसी की हानि या अहित हुआ है। पके फल एक दिन स्वयं ही गिर पड़ते और कोई उसे खाता ही, इसलिए राजा के नाते जहाँ दंड देने का अधिकारी हूँ, वहीं क्षमा करने का भी अधिकारी हूँ, मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ।''

लिखित ने कहा – ''महाराज! मुझे क्षमा नहीं दंड चाहिए। अतः आप किसी प्रकार का संकोच न कर विधान के अनुसार मुझे दंड दीजिए।

लिखित का दंड के लिए इतना आग्रह देखकर सुद्युम्न ने चोरी के अपराध के लिए लिखित के दोनों हाथ काटने का आदेश दिया। दोनों हाथ कट जाने पर लिखित शंख के पास आए और बड़ी दीनता से कहा कि उन्हें दंड प्राप्त हो चुका है। शंख ने लिखित को गले से लगाते हुए कहा – ''भाई, मैंने तुमसे धार्मिक मर्यादा की रक्षा के लिए वैसा कहा था। अब शीघ्र जाकर बाहुदा नदी के तट पर देवों-पितरों का तर्पण करो तथा भविष्य में अपने पर इतना संयम रखना कि कभी भी तुमसे मर्यादा का उल्लंघन न हो।''

बाहुदा नदी के तट पर देवों-पितरों की अभ्यर्थना कर, जैसे ही लिखित ने जल में खड़े होकर तर्पण करने के लिए तैयार हुए कि उनकी दोनों भुजाओं में दो हाथ यथावत् प्रकट होकर अंजुलि में जल भरकर ऊपर उठे। लगा, जैसे उनके पाप का प्रायश्चित पूरा हो गया।

हमारे देश का एक वह युग था जब अपराध बोध से ग्रस्त होकर अपराधी स्वयं अपराध का दंड माँगने राजा के पास जाते थे। आज अपराधी न्याय-दंड से बचना चाहते हैं। समय के साथ जीवन-मूल्यों में भले ही आज यह अवमूल्यन हो रहा है, पर हमारी सांस्कृतिक विरासत हमें यह उद्बोध देती है कि हम अपनी त्रुटियों को स्वीकारें, अपने पाप का प्रायश्यित करें। न्यायपालिका द्वारा दिए गए दंड को स्वीकारें। अपराधी को स्वयं दंड देने का निर्णय भूलकर भी न लें। ऐसा करने से मन निर्मल होगा, प्रवृत्तियाँ सात्विक होंगी। सात्विक गुणों का विकास होगा। मानव-जीवन श्रेष्ठता की ओर ऊर्ध्वागामी होगा। **[4x5=20]**

प्रश्न

(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए तथा उसके औचित्य पर प्रकाश डालिए ।

(ii) लिखित के किस कार्य ने शंख को बेचैन कर दिया था और क्यों ?

(iii) लिखित महाराज सुद्युम्न के दरबार में क्यों गए थे ? वहाँ उन्होंने राजकीय सत्कार स्वीकार क्यों नहीं किया?

Downloaded From www.icseboard.org

(iv) दंड देने का अधिकारी कौन होता है ? लिखित के पाप का प्रायश्चित कब, कैसे पूर्ण हुआ ?

(v) हमारी सांस्कृतिक विरासत हमें क्या उद्‌बोध देती है ? आपके विचार में मानव-जीवन की श्रेष्ठता किसमें है?

**प्र.3. निम्नलिखित मुहावरों से वाक्य बनाएँ :-** **[1x5=5]**

(i) मुँह फैलाना ।

(ii) नमक - मिर्च लगाना ।

(iii) धुन का पक्का ।

(iv) हाथ साफ करना ।

(v) आँखों में खटकना ।

**प्र.4. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कर पुनः लिखिए :-** **[1x5=5]**

(i) शेर को देखकर मेरे प्राण सो गए ।

(ii) आजकल सोहन ईद जैसा चाँद हो गया है ।

(iii) मैं खाना नहीं खाया हूँ ।

(iv) सुरेश दण्ड देने के योग्य है ।

(v) गेंदे के पौधे पर मैंने कई फूलों को देखा ।

## हिन्दी साहित्य [12½x4 = 25]

**किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक पुस्तक से एक-एक प्रश्न करना अनिवार्य है।**

### गद्य संकलन

**1. 'आउट साइडर'**

**प्रस्तुत कहानी में 'आउट साइडर' किसे कहा गया है और क्यों? कहानी में वर्णित घटनाओं के आधार पर स्पष्ट कीजिए। कहानी का उद्देश्य भी लिखिए।**

**अथवा**

**"तुम यहाँ हमेशा आउट साइडर ही रहोगी।"**

(i) उक्त कथन किसने कहा है ? इस कथन के पीछे वक्ता का क्या उद्देश्य है ? **[1½]**

(ii) नीलम अपनी इस दशा के लिए किसे जिम्मेदार मानती है और क्यों ? **[3]**

(iii) क्या नीलम पूनम के उक्त विचार से सहमत है ? **[3]**

(iv) इस कहानी के माध्यम से लेखिका मालती जोशी क्या सन्देश देना चाहती हैं ? **[5]**

**2. 'दासी' - 'दासी' कहानी के माध्यम से कहानीकार ने तत्कालीन समाज की किस समस्या को उद्‌घाटित करने का प्रयास किया है ?**

Downloaded From www.icseboard.org

3. **"परन्तु ठहरता कहाँ ? जात छिपाने से काम नहीं चलता था ?" – कहानी का सार लिखते हुए बताइए कि** यहाँ पर किसके ठहरने की बात कही गई है ? जात छिपाने से क्या अभिप्राय है ? कौन किसकी जात छिपाने की कोशिश कर रहा है ? कहानी का उद्देश्य भी स्पष्ट कीजिए।

## काव्य मंजरी

4. **'तुलसीदास के पद'**

**दूलह श्री रघुनाथ बने दुलही सिय सुन्दर मंदिर माहीं ।**
**गावति गीत सबै मिलि सुन्दर बेद जुबा जुरिविप्र पढ़ाहीं**
**राम को रूप निहारति जानकी कंगन के नग की पर छाहीं ।**
**यातें सबै सुधि भूलि गई कर टेकि रही पल हारत नाहीं।**

(i) राम का रूप कौन और कैसे निहार रही है ? **[1½]**

(ii) दूल्हा और दुल्हन कौन बने हैं ? वे कहाँ हैं और उस वक्त वहाँ क्या हो रहा है ? **[3]**

(iii) सीताजी सब सुधि क्यों भूल गई ? इससे सीता जी की किस विशेषता का पता चलता है ? **[3]**

(iv) प्रस्तुत पद कहाँ से उद्घृत है ? कवि तुलसीदास जी का साहित्यिक परिचय दीजिए। **[5]**

5. **'जाग तुझको दूर जाना'**
**उक्त कविता में कवयित्री किसे सम्बोधित कर रही हैं और क्या प्रेरणा दे रही हैं ? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

6. **'एक फूल की चाह'**
**कविता का सार लिखकर, उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।**

## आषाढ़ का एक दिन

7. **'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के आधार पर 'मल्लिका' का चरित्र चित्रण कीजिए।**

8. **द्वितीय खंड की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए ।**

9. **पठित अंश में किस घटना या प्रसंग ने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया ? नाटक के आधार पर तर्क सहित उत्तर दीजिए।**

Downloaded From www.icseboard.org